शोध सामग्री संकलन के प्रमुख स्रोत

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com
Pre- Ph.D Course Work,
Paper - Research Methodology

शोध विषय की रूप रेखा तैयार कर लेने के बाद शोधार्थी को सामग्री संकलन करना अनिवार्य होता है। सामग्री संकलन एक वैज्ञानिक कार्य है। शोधार्थी के लिए यह कार्य उलझन बन जाता है। शोध के संदर्भ में सामग्री शब्द का प्रयोग उसके उपादान साधन वे तथ्य हैं जिनके पूँजी भूत समुदाय से शोध प्रबंध आकार ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शोध का मौलिक आधार सामग्री संकलन है। जिसके बिना शोध के विषय को मौलिकता प्रदान नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार भवन के निर्माण में भौतिक उपादानों की आवश्यकता होता है, उसी प्रकार शोध प्रबंध को मूर्त रूप देने के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सामग्री या तथ्यों का संकलन करना जरूरी हो जाता है। शोध सामग्री को मोटे तोर पर दो भागों में विभाजित किया जाता है– मूल सामग्री और सहायक सामग्री।

मूल सामग्री :– मूल सामग्री के अन्तर्गत उन तथ्यों को स्थान प्राप्त होगा, जिनके अभाव में अनुसंधान का कार्य संभव ही नहीं हो सकता। जिस प्रकार आधार के अभाव में आधेय की कल्पना नहीं की जा सकती। उसी प्रकार मूल सामग्री के अभाव में शोध–प्रबंध का लेखन संभव नहीं हो सकता।

सहायक सामग्री :– सहायक सामग्री वह है जो शोधार्थी की स्थापना की पुष्टी के लिए बाह्य युक्ति, तर्क, प्रमाण आदि की आवश्यकता है। जैसे– समकालीन

कवियों की रचनाओं से उपलब्ध सामग्री, कथाकर उदय प्रकाश की कहानी पर शोध करने के लिए कहानी–संग्रह के अलावा उनकी अन्य रचनाओं की भी आवश्यकता है। साथ–ही हिन्दी कहानीकार की कहानियों की रचना भी आवश्यक है।

शोध सामग्री के संकलन के प्रमुख स्रोत निम्न हैं–

प्रकाशित ग्रन्थ :– विषय से संबंधित प्रकाशित ग्रन्थों की सूची के अनुसार उन्हें विविध पुस्तकालयों से उन्हें उपलब्ध करने का प्रयास करना चाहिए। हिन्दी विषय की शोध सामग्री के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता, मुम्बई, नागरी प्रचारिणी सभा वाणारसी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग आदि प्रमुख पुस्तकालय हैं। जहाँ प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध हो जाती है।

अप्रकाशित ग्रन्थ :– अप्रकाशित ग्रन्थ को हस्तलिखित ग्रन्थ भी कह सकते हैं। अप्रकाश्ति ग्रन्थों की सूची बड़े पुस्तकालयों में उपलब्ध रहती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, नागरी प्रचारिणी सभा आगरा, ब्रज साहित्य मंडल मथुरा, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद पटना आदि संस्थानों ने अपने संग्रहालय के अप्रकाशित ग्रन्थों की सूचियाँ तैयार की। राजस्थान के जैन मंदिरों में हस्तलिखित ग्रंन्थों का भंडार है। हस्तलिखित हिन्दी गन्थों के विवरण नाम से काशी नागरी प्रचारिणी सभा से वह कई भागों से प्रकाशित हुआ है। शोधार्थी अपने शोध विषय के अनुरूप आवश्यक हस्तलिखित का प्रयोग कर सकता है। ताकि शोध की मौलिकता प्रदान की जा सकती है।

प्रतिवेदन :– समय- समय पर विभिन्न विषयों पर शासकीय अशासकीय प्रतिवेदन प्रकाशित होता रहता है। प्रतिवर्ष सरकार अपने प्रांत की प्रगति प्रतिवेदन प्रकाशित कराती है। उनसे भी विषयानुसार सामग्री मिल सकती है।

संस्मरण :– डायरी, आत्मकथा, यात्रा विवरण, लेखकों के पत्र आदि से भी 'शोध के लिए सामग्री प्राप्त हो सकती है। इनसे साहित्यकारों की युग, चिन्तन, परिस्थितियाँ आदि की जानकारी मिल सकती है।

गजेटियर :– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पुराने गजेटियर के संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं। इनसे भी शोध कर्ता अभीष्ट सामग्री प्राप्त कर सकता है। इनका उपयोग बहुत सार्थकता से करना चाहिए, क्योंकि बहुत सी सामग्री किवदंतियाँ है।

पत्र–पत्रिकाएँ :– साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं के विभिन्न अंकों तथा विशेषांकों से भी शोध सामग्री उपलब्ध हो सकती है। जिससे शोध–प्रबंध लेखन में बहुत कुछ मदद मिल सकता है। जैसे– द्विवेदी युग की साहित्यिक गतिविधियों को समझने के लिए 'सरस्वती' के अंकों को पढ़े बिना द्विवेदी युग का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। साहित्य अमृत, अलाव, वागर्थ, हंस, आजकल आदि पत्रिकाओं के आलेख से शोधार्थी को सहायक मिल जाता है।

व्यक्ति :– पुराने साहित्य प्रेमियों से भी कभी–कभी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। पुराने पीढ़ी के लेखकों से भी उस समय की महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। वर्तमान व्यक्तियों की भेंट वार्ता भी शोध की महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करते हैं।

समीक्षात्मक सामग्री :– जिस विषय पर शोधार्थी शोध कार्य में प्रवृत्ति हुआ हो, उससे संबंधित समस्त पूर्व लिखित सामग्री का अध्ययन आवश्यक होता है। यद्यपि सामान्यतः समीक्षात्मक कृतियों में एक जैसे तथ्यों की पुनरावृत्ति रहती है। किंतु इसमें भी कोई संदेह नहीं की ऐसे सामग्री का अनुशीलन करते समय कभी–कभी कहीं नवीन दृष्टिबोध भी हो जाता है।

शोध सामग्री का संकलन के प्रमुख स्रोतों से चाहे जितनी वैज्ञानिक पद्धति से किया जाए। फिर भी उसके मूल्य में व्यक्तिनिष्ठा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि एक सी सामग्री का अनुशीलन करने पर भी दो भिन्न शोध कर्ताओं की दृष्टि में मौलिक अन्तर लक्षित होता है। सामग्री संकलन के समय इस बात पर ध्यान अवश्य रखना चाहिए की स्वीकृत तथ्यों के अतिरिक्त नवीन दिशाओं के उद्‌घाटन की किती संभावना हो सकती है। इसी कारण शोधार्थी के लिए ऐसी सामग्री सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। जो ज्ञान के विस्तार में सहायक हो।